# चंद्रो तोमर उर्फ़ शूटर दादी

65 साल की इस दादी के लिए  उम्र बस एक आंकड़ा था।  उनका जोश किसी युवा से कम नहीं है।  अपनी पोती शिफाली के ट्रेनिंग के लिए जब वह इंस्टिट्यूट पहुंची तो उन्हें खबर नहीं थी कि यहाँ  से कोई और कहानी निकलेगी।  अपनी पोती के दिल से बन्दूक का डर निकालने के लिए दादी ने जब शूट किया तो बिल्कुल सही निशाना लगा। वहाँ के लोग और कोच  देखकर दंग हो गए।  उन्होंने दादी  को दोबारा से शूट करने के लिए कहा और एक के बाद एक हर निशाना बिल्कुल सही लगते गया | कोच, फारूख पठान ने उन्हें ट्रेनिंग में शामिल होने के लिए कहा| वो तैयार तो होगई लेकिन घर में जिम्मेदारियों के बीच फंसी रहने की वजह से उन्होंने रात  में उठकर अपना अभ्यास किया।  वह  पानी का जग भर्ती और अपने हाथ को बैलेंस करने की ट्रेनिंग देती।

यह  शूटर दाड़ियाँ  अब तक के 25 से ज्यादा नेशनल चैंपियनशिप में हिस्सा ले चुकी हैं और 50 से ज्यादा मेडल जीतकर उन्होंने अपने गांव का नाम किया है।  अभी भी वह अपनी हुनर का जोहर दिखा रही है और " जोहड़ी राइफल क्लब" में आने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन करती हैं।